डाक-पंजीयन म.प्र./भोपाल/4-472/20-
पोस्टिंग दिनांक : प्रतिमाह दिनांक 27, पृष्ठ सं. 100
प्रकाशन दिनांक : 20 से 25 प्रतिमाह
आर.एन.आई क्र. : 38470/83
आई.एस.एस.एन. क्र. : 2456-7167
मूल्य 25/-

38 वाँ वर्ष

अक्षरा

जुलाई 2020
184

साहित्य की मासिकी

कोरोना संकट की आड़ में साभ्यतिक बदलाव की आहट

- अम्बिकादत्त शर्मा

जन्म - 1 जनवरी 1960।
जन्म स्थान - चतरा अंचल, (झारखंड)
शिक्षा - एम.ए. एवं पी-एच.डी.।
सम्मान - आप महामहोपाध्याय रिसर्च अवार्डतथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, मध्यप्रदेश द्वारा नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान से सम्मानित हैं।

आज समूची दुनिया कोविड-19 नामक महामारी की चपेट में है। महामारियाँ तो पहले भी आती रही हैं और मनुष्य अपना बचाव करने में सफल भी होता रहा है। आशा है, इस बार भी कोरोना हारेगा और मनुष्य की जीत होगी। परन्तु हारा हुआ कोरोना इस बार जाते-जाते इतना तो जरूर कहता जायेगा कि मैं आधुनिक सभ्यता का वायरस हूँ और मेरे फलने-फैलने की बेशुमार सुचालकता उसकी रगों में है। अब यह मानव-जाति के विवेक पर निर्भर करता है कि वह आधुनिक सभ्यता के व्यामोह से निजात पाने का विकल्प ढूँढ़ेगा या फिर उसी के एक आभासी आयाम (वर्चुअल डायमेन्शन) को विकसित कर लेगा जो मेरी संक्रामक शक्ति की पकड़ से बाहर हो।

कोरोना वायरस की यह चेतावनी काल्पनिक ही सही लेकिन जायज है, क्योंकि इससे फैली यह महामारी वैसी नहीं जैसी कि पहले की महामारियाँ होती थीं। यह कई मायने में बिलकुल अलग प्रकार की है। इससे पहले की महामारियों को निरपवाद रूप से प्राकृतिक अशुभ (नेचुरल इविल) माना जाता था, लेकिन इसके पीछे ऐसी आशंका जतायी जा रही है कि यह नैतिक अशुभ (मोरल इविल) है। सम्भव है कि यह किसी दुष्ट मानवीय चेष्टा की सोची-समझी कारगुजारी हो। पहले की महामारियाँ तीव्र गति से मनुष्य को मृत्यु के कराल गाल में झोंक देती थीं और उनके फैलने की गति धीमी होती थी। परन्तु कोरोना वायरस मनुष्य को धीरे-धीरे मारता है और इसके फैलने की रफ्तार बहुत तेज है। जबकि यह वायुमण्डल पर सवार होकर बहुत दूर की यात्रा करने में सक्षम नहीं। पहले की महामारियाँ अक्सर गन्दी बस्तियों से फैलती थीं, क्योंकि गाँव-देहात का जीवन हाइजनिक नहीं हुआ करता था, परन्तु कोविड-19 महानगरों से फैली महामारी है।

मनुष्य के मन-मस्तिष्क पर इसकी प्रभावमत्ता इतनी अधिक है कि विश्व इतिहास में सम्भवत: यह पहली घटना हो जिसका संज्ञान पूरी दुनिया भर में एक साथ लिया गया है। किसी घटना का वैश्वीय स्तर पर संज्ञान में लिया जाना एक प्रकार की वैश्वीय एकजुटता को प्रदर्शित करने वाली पहल होती है। परन्तु यह कैसी विडम्बना है कि वैश्वीय एकजुटता की इस संज्ञानात्मकता में अन्दर ही अन्दर प्रत्येक मनुष्य दूसरे मनुष्य से अलग-थलग रहने के लिए विवश कर दिया गया है। हर एक आदमी